

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग और राजस्थान की उभरती रणनीतिक भूमिका

राज सिंह इन्दौलिया

शोधार्थी, जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

सारांश

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग वर्तमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में भारत की व्यापारिक, ऊर्जा एवं रणनीतिक प्राथमिकताओं को सुदृढ़ करने वाला महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है। इस संदर्भ में राजस्थान अपनी भौगोलिक स्थिति, समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों, औद्योगिक आधार, कृषि उत्पादों, खनिज संपदा, हस्तशिल्प तथा पर्यटन क्षमता के कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत और मध्य पूर्व के बीच बढ़ते आर्थिक संबंधों के संदर्भ में राजस्थान की उभरती रणनीतिक भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में व्यापार, निवेश, ऊर्जा सहयोग, परिवहन एवं लॉजिस्टिक संपर्क, निर्यात संवर्धन तथा रोजगार सृजन की संभावनाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। राजस्थान के बंदरगाह-संपर्क मार्गों, औद्योगिक क्षेत्रों और दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे से जुड़ाव के माध्यम से मध्य पूर्वी बाजारों तक पहुँच को बढ़ाया जा सकता है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि बेहतर अवसंरचना, नीतिगत सहयोग और निवेश अनुकूल वातावरण राजस्थान को भारत-मध्य पूर्व आर्थिक साझेदारी का महत्वपूर्ण केंद्र बना सकते हैं।

प्रमुख शब्द: भारत-मध्य पूर्व सहयोग, राजस्थान, व्यापार, निवेश, ऊर्जा, निर्यात, लॉजिस्टिक संपर्क, आर्थिक विकास।

1. परिचय

भारत और मध्य पूर्व के बीच आर्थिक संबंधों का इतिहास अत्यंत पुराना, बहुआयामी और निरंतर विकसित होता रहा है। प्राचीन काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप और पश्चिम एशिया के बीच समुद्री तथा स्थल मार्गों के माध्यम से वस्तुओं, विचारों और सांस्कृतिक परंपराओं का आदान-प्रदान होता रहा है। आधुनिक काल में इन संबंधों का स्वरूप मुख्यतः व्यापार, ऊर्जा, निवेश, प्रवासन तथा सामरिक सहयोग के आधार पर विकसित हुआ। विशेष रूप से स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने मध्य पूर्व के देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को क्रमशः संस्थागत रूप प्रदान किया। भारत के लिए मध्य पूर्व केवल भौगोलिक रूप से निकट क्षेत्र नहीं है, बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा, व्यापारिक संपर्क, विदेशी मुद्रा आय, निवेश तथा वैश्विक बाजारों तक पहुँच की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, खाड़ी क्षेत्र भारत के आर्थिक और सामरिक हितों का एक महत्वपूर्ण केंद्र है तथा भारत के इन देशों के साथ व्यापारिक एवं जन-से-जन संबंध लगातार मजबूत हुए हैं (भारत सरकार, 2024)।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में मध्य पूर्व की भूमिका मुख्यतः इसकी ऊर्जा संपदा, भौगोलिक स्थिति और वैश्विक व्यापार मार्गों पर इसके नियंत्रण के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, ओमान और इराक जैसे देशों के पास पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस के विशाल

भंडार हैं, जिसके कारण यह क्षेत्र वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति व्यवस्था का प्रमुख आधार बना हुआ है। यद्यपि वैश्विक अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करने की दिशा में आगे बढ़ रही है, फिर भी निकट एवं मध्यम अवधि में मध्य पूर्व की ऊर्जा भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहने की संभावना है। इसके साथ ही क्षेत्र के अनेक देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं में विविधीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं तथा पर्यटन, वित्त, विनिर्माण, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निवेश कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, मध्य पूर्व आने वाले वर्षों में पारंपरिक ऊर्जा के साथ-साथ नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा संक्रमण से संबंधित निवेश का भी महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है (अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी, 2024)। इस आर्थिक परिवर्तन ने भारत जैसे देशों के लिए सहयोग के नए अवसर उत्पन्न किए हैं।

भारत के लिए मध्य पूर्व का महत्व ऊर्जा आयात तक सीमित नहीं है। भारत की पेट्रोलियम आवश्यकता का एक बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा होता है और मध्य पूर्व इसके प्रमुख आपूर्तिकर्ता क्षेत्रों में शामिल है। इसलिए इस क्षेत्र में राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिरता भारत की ऊर्जा सुरक्षा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। इसके अतिरिक्त संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब जैसे देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों में निरंतर विस्तार हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में शामिल है और दोनों देशों के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते ने द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश को नई गति प्रदान की है (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, 2024)। भारत के लिए मध्य पूर्व का महत्व भारतीय प्रवासी समुदाय के कारण भी बढ़ जाता है। खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक कार्यरत हैं, जो भारत को महत्वपूर्ण मात्रा में प्रेषण भेजते हैं। विश्व बैंक के अनुसार, भारत विश्व के प्रमुख प्रेषण प्राप्तकर्ता देशों में बना हुआ है और खाड़ी क्षेत्र भारतीय प्रवासी आय का महत्वपूर्ण स्रोत है (विश्व बैंक, 2024)। इस प्रकार मध्य पूर्व भारत की ऊर्जा, व्यापार, निवेश और मानव संसाधन संबंधी आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में राजस्थान का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है। राजस्थान भले ही समुद्र से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ राज्य नहीं है, लेकिन इसकी भौगोलिक स्थिति इसे उत्तर भारत, पश्चिमी भारत और गुजरात के समुद्री बंदरगाहों के बीच महत्वपूर्ण संपर्क क्षेत्र बनाती है। राज्य की खनिज संपदा, कृषि एवं कृषि-आधारित उत्पाद, वस्त्र, हस्तशिल्प, रत्न एवं आभूषण, पत्थर उद्योग, पर्यटन तथा तेजी से विकसित हो रहा नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र मध्य पूर्वी बाजारों के लिए महत्वपूर्ण संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं। राजस्थान की सौर ऊर्जा क्षमता भी इसे भारत की ऊर्जा संक्रमण रणनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे तथा पश्चिमी माल गलियारे से राज्य का जुड़ाव इसकी औद्योगिक एवं लॉजिस्टिक क्षमता को मजबूत करता है (राजस्थान सरकार, 2024)। इसलिए भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग के विस्तार के साथ राजस्थान केवल वस्तुओं के संभावित निर्यातक के रूप में ही नहीं, बल्कि उत्पादन, निवेश, ऊर्जा, पर्यटन और लॉजिस्टिक संपर्क के उभरते केंद्र के रूप में भी विकसित हो सकता है। इस दृष्टि से भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग और राजस्थान की उभरती रणनीतिक भूमिका का अध्ययन राष्ट्रीय आर्थिक हितों तथा क्षेत्रीय विकास, दोनों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग के प्रमुख आयाम

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुका है, जिसमें व्यापार, निवेश, ऊर्जा, कृषि, परिवहन, लॉजिस्टिक, रोजगार तथा प्रवासन जैसे क्षेत्र प्रमुख हैं। भारत के लिए मध्य पूर्व केवल ऊर्जा संसाधनों का स्रोत नहीं है, बल्कि यह भारतीय उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण बाजार, विदेशी निवेश का संभावित स्रोत तथा यूरोप और अफ्रीका के बाजारों से जुड़ने वाला रणनीतिक क्षेत्र भी है। इसी प्रकार मध्य पूर्व के देश भारत को एक बड़े उपभोक्ता बाजार, कुशल मानव संसाधन तथा तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में देखते हैं। परिणामस्वरूप दोनों क्षेत्रों के बीच आर्थिक संबंध पारंपरिक वस्तु व्यापार से आगे बढ़कर व्यापक आर्थिक साझेदारी में परिवर्तित हो रहे हैं।

भारत और मध्य पूर्व के बीच व्यापार एवं निवेश संबंधों में पिछले वर्षों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। विशेष रूप से संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कतर, ओमान, कुवैत और बहरीन भारत के प्रमुख आर्थिक साझेदारों के रूप में उभरे हैं। भारत से इन देशों को पेट्रोलियम उत्पादों के अतिरिक्त

खाद्य पदार्थ, वस्त्र, रत्न एवं आभूषण, औषधियाँ, मशीनरी, इंजीनियरिंग उत्पाद तथा अन्य विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात किया जाता है। दूसरी ओर भारत मध्य पूर्व से कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, पेट्रो-रसायन, उर्वरक तथा अन्य ऊर्जा एवं औद्योगिक उत्पाद आयात करता है। संयुक्त अरब अमीरात के साथ व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते ने व्यापारिक बाधाओं को कम करने और निवेश संबंधों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, 2024)। इसी प्रकार सऊदी अरब और भारत के बीच निवेश, अवसंरचना, ऊर्जा तथा औद्योगिक सहयोग में विस्तार हुआ है। इस प्रकार व्यापार संबंध अब वस्तुओं के आदान-प्रदान तक सीमित न रहकर दीर्घकालीन निवेश एवं उत्पादन साझेदारी की ओर बढ़ रहे हैं।

ऊर्जा सुरक्षा भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग का सबसे महत्वपूर्ण आयाम है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है और मध्य पूर्व इसके लिए प्रमुख ऊर्जा स्रोतों में शामिल है। सऊदी अरब, इराक, संयुक्त अरब अमीरात और कतर जैसे देश भारत की कच्चे तेल तथा प्राकृतिक गैस की आवश्यकता को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऊर्जा क्षेत्र में संबंध अब केवल पेट्रोलियम आयात तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पेट्रो-रसायन, प्राकृतिक गैस, हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा तथा अन्य स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रों तक विस्तृत हो रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, ऊर्जा संक्रमण के बावजूद तेल और गैस आने वाले वर्षों में वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था में महत्वपूर्ण बने रहेंगे, जबकि नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश तेजी से बढ़ेगा (अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी, 2024)। इस परिवर्तन से भारत और मध्य पूर्व के बीच पारंपरिक ऊर्जा सहयोग के साथ नई ऊर्जा साझेदारियों की संभावनाएँ भी बढ़ रही हैं।

खनिज, पेट्रोलियम एवं नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र आर्थिक सहयोग के उभरते हुए आयाम हैं। भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था को विभिन्न खनिजों और ऊर्जा संसाधनों की निरंतर आवश्यकता है, जबकि मध्य पूर्व के अनेक देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं में विविधीकरण के लिए नए निवेश अवसर तलाश रहे हैं। भारत और खाड़ी देशों के बीच पेट्रो-रसायन, तेल शोधन तथा ऊर्जा अवसंरचना में सहयोग की संभावनाएँ महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही सौर एवं पवन ऊर्जा में सहयोग का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। राजस्थान जैसे राज्यों के लिए यह विशेष महत्व रखता है, क्योंकि राज्य में विशाल सौर ऊर्जा क्षमता उपलब्ध है। मध्य पूर्व के देशों द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा में बढ़ते निवेश तथा भारत की सौर ऊर्जा क्षमता के बीच सहयोग विकसित किया जा सकता है। इससे ऊर्जा व्यापार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और हरित निवेश के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

खाद्य एवं कृषि व्यापार भी भारत-मध्य पूर्व संबंधों का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। मध्य पूर्व के अनेक देश जल एवं कृषि योग्य भूमि की सीमित उपलब्धता के कारण खाद्य पदार्थों के आयात पर निर्भर हैं। भारत की विशाल कृषि अर्थव्यवस्था इन देशों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। चावल, गेहूँ, मसाले, फल, सब्जियाँ, डेयरी उत्पाद तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के निर्यात की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था में बाजरा, मसाले, दालें, तिलहन तथा अन्य कृषि उत्पादों का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि कृषि प्रसंस्करण, गुणवत्ता प्रमाणन, शीत भंडारण और निर्यात लॉजिस्टिक को मजबूत किया जाए, तो राजस्थान मध्य पूर्व के खाद्य बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ा सकता है। खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में दीर्घकालीन साझेदारी भारत और मध्य पूर्व दोनों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी हो सकती है।

परिवहन, बंदरगाह और लॉजिस्टिक संपर्क भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग को व्यावहारिक रूप देने वाले महत्वपूर्ण आधार हैं। भारत का पश्चिमी समुद्री तट मध्य पूर्व के साथ व्यापारिक संपर्क का प्रमुख मार्ग है। गुजरात के मुंद्रा तथा कांडला जैसे बंदरगाहों के साथ पश्चिमी भारत के औद्योगिक क्षेत्रों का संपर्क राजस्थान सहित उत्तर-पश्चिमी भारत के निर्यात को मध्य पूर्वी बाजारों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण है। राजस्थान का दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे तथा पश्चिमी माल गलियारे से जुड़ाव राज्य की लॉजिस्टिक क्षमता को और मजबूत करता है (राजस्थान सरकार, 2024)। बेहतर रेल, सड़क, भंडारण और माल परिवहन व्यवस्था राजस्थान के उत्पादों की परिवहन लागत कम कर सकती है तथा निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ा सकती है।

रोजगार, प्रवासन एवं प्रेषण भी भारत-मध्य पूर्व आर्थिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक आधार हैं। खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक निर्माण, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा, परिवहन, आतिथ्य और अन्य क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इनके द्वारा भारत भेजी जाने वाली प्रेषण राशि

भारतीय परिवारों की आय तथा देश की विदेशी मुद्रा स्थिति को मजबूत करती है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत विश्व के सबसे बड़े प्रेषण प्राप्तकर्ता देशों में बना हुआ है (विश्व बैंक, 2024)। हालांकि भविष्य में कौशल की बदलती मांग को देखते हुए भारत को उच्च-कौशल, तकनीकी और पेशेवर श्रम की तैयारी पर अधिक ध्यान देना होगा। इस प्रकार रोजगार एवं प्रवासन संबंध भी आर्थिक कूटनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं।

3. राजस्थान की आर्थिक क्षमता एवं मध्य पूर्व से जुड़ाव

राजस्थान की आर्थिक क्षमता को केवल उसके विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल या प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर नहीं, बल्कि भारत के पश्चिमी एवं उत्तर-पश्चिमी भागों को जोड़ने वाली उसकी भौगोलिक स्थिति के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है। राज्य की पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगती है, जबकि यह पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे महत्वपूर्ण राज्यों से जुड़ा हुआ है। यह स्थिति राजस्थान को उत्तर भारत के उपभोक्ता एवं औद्योगिक बाजारों तथा पश्चिमी समुद्री बंदरगाहों के बीच एक महत्वपूर्ण संपर्क क्षेत्र बनाती है। यद्यपि राज्य का अपना समुद्री तट नहीं है, फिर भी गुजरात के बंदरगाहों तक सड़क और रेल संपर्क तथा दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे से जुड़ाव इसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं। राजस्थान की यह भौगोलिक स्थिति भारत-मध्य पूर्व व्यापारिक संपर्क के संदर्भ में विशेष महत्व रखती है, क्योंकि पश्चिमी समुद्री मार्गों के माध्यम से मध्य पूर्व तक पहुँच राज्य के उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण निर्यात अवसर उपलब्ध करा सकती है (राजस्थान सरकार, 2024)।

राजस्थान खनिज एवं प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से भारत के प्रमुख राज्यों में शामिल है। राज्य में जस्ता, सीसा, चूना पत्थर, संगमरमर, जिप्सम, फॉस्फोराइट, तांबा तथा विभिन्न प्रकार के भवन निर्माण पत्थरों के महत्वपूर्ण भंडार उपलब्ध हैं। खनिज आधारित उद्योग राज्य की औद्योगिक अर्थव्यवस्था तथा निर्यात क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। विशेष रूप से संगमरमर, ग्रेनाइट और अन्य सजावटी पत्थरों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग राजस्थान के लिए निर्यात की महत्वपूर्ण संभावना प्रस्तुत करती है। मध्य पूर्व के देशों में निर्माण, शहरी अवसंरचना और रियल एस्टेट क्षेत्रों के निरंतर विस्तार के कारण भवन निर्माण सामग्री की मांग बनी हुई है। ऐसे में राजस्थान के पत्थर, खनिज आधारित उत्पाद तथा संबंधित प्रसंस्कृत सामग्री मध्य पूर्वी बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक स्थान प्राप्त कर सकती हैं। भारतीय खान ब्यूरो के अनुसार, राजस्थान देश के महत्वपूर्ण खनिज उत्पादक राज्यों में शामिल है तथा अनेक खनिजों के उत्पादन में इसकी उल्लेखनीय हिस्सेदारी है (भारतीय खान ब्यूरो, 2023)। इससे स्पष्ट है कि खनिज संसाधन भारत-मध्य पूर्व आर्थिक संबंधों में राजस्थान की भूमिका को मजबूत करने का आधार बन सकते हैं।

कृषि एवं कृषि-आधारित उत्पाद भी राजस्थान की आर्थिक क्षमता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। राज्य की जलवायु और भौगोलिक विविधता के कारण यहाँ बाजरा, गेहूँ, दालें, तिलहन, मसाले, सरसों तथा विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियों का उत्पादन होता है। विशेष रूप से बाजरा जैसे मोटे अनाजों की बढ़ती वैश्विक मांग राजस्थान के लिए नए निर्यात अवसर पैदा कर रही है। मध्य पूर्व के अनेक देश खाद्य सुरक्षा के लिए आयात पर निर्भर हैं और भारत उनके लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य आपूर्तिकर्ता बन सकता है। राजस्थान से कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने के लिए प्रसंस्करण, पैकेजिंग, गुणवत्ता नियंत्रण, शीत भंडारण और आपूर्ति शृंखला प्रबंधन को मजबूत करना आवश्यक है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के अनुसार, भारत से कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात में पश्चिम एशियाई बाजारों का महत्वपूर्ण स्थान है (कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, 2024)। इस संदर्भ में राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था को मध्य पूर्व की खाद्य आवश्यकताओं से जोड़ने की पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं।

राजस्थान का वस्त्र, हस्तशिल्प तथा रत्न एवं आभूषण क्षेत्र भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में राज्य की पहचान को मजबूत करता है। जयपुर के रत्न एवं आभूषण, सांगानेरी और बगरू की छपाई, कोटा डोरिया, ऊनी एवं सूती वस्त्र, चमड़े के उत्पाद, नीली मिट्टी की कला, लकड़ी एवं धातु शिल्प तथा विभिन्न पारंपरिक हस्तशिल्प उत्पादों की देश-विदेश में मांग है। मध्य पूर्व में भारतीय पारंपरिक वस्त्र, आभूषण और सजावटी वस्तुओं के लिए एक विशिष्ट बाजार उपलब्ध है। विशेष रूप से उच्च आय वाले उपभोक्ताओं के कारण हस्तनिर्मित, विशिष्ट डिजाइन तथा सांस्कृतिक पहचान वाले उत्पादों के लिए बाजार

की संभावनाएँ अधिक हैं। यदि राजस्थान के कारीगरों और लघु उद्यमों को डिजिटल विपणन, अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन, ब्रांड निर्माण और निर्यात प्रक्रियाओं से जोड़ा जाए, तो मध्य पूर्वी बाजारों में उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार हस्तशिल्प केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि विदेशी व्यापार और स्थानीय रोजगार का महत्वपूर्ण माध्यम भी बन सकता है।

पर्यटन एवं सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था राजस्थान की मध्य पूर्व से जुड़ने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण कड़ी है। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, अजमेर तथा अन्य शहरों की ऐतिहासिक धरोहर, किले, महल, धार्मिक स्थल, लोककला, संगीत, हस्तशिल्प और पारंपरिक जीवनशैली अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। मध्य पूर्व के देशों से आने वाले पर्यटकों के लिए राजस्थान की शाही विरासत, रेगिस्तानी पर्यटन, विवाह पर्यटन तथा विलासिता आधारित पर्यटन विशेष आकर्षण का क्षेत्र हो सकता है। पर्यटन के विस्तार से होटल, परिवहन, हस्तशिल्प, खाद्य सेवाओं और स्थानीय उद्यमों में रोजगार एवं आय के अवसर उत्पन्न होते हैं। अतः मध्य पूर्व के साथ आर्थिक संबंधों को केवल वस्तु व्यापार तक सीमित रखने के बजाय पर्यटन सेवाओं और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था तक विस्तारित करना राज्य के लिए लाभकारी हो सकता है।

नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर ऊर्जा, राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण उभरती आर्थिक शक्तियों में से एक है। राज्य में विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र, उच्च सौर विकिरण तथा बड़े पैमाने पर उपलब्ध भूमि इसे सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए अनुकूल बनाती है। राजस्थान में बड़े सौर ऊर्जा पार्कों तथा परियोजनाओं के विकास ने राज्य को भारत के प्रमुख सौर ऊर्जा केंद्रों में स्थापित किया है (नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, 2024)। मध्य पूर्व के कई देश भी जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करने तथा ऊर्जा अर्थव्यवस्था में विविधीकरण के लिए नवीकरणीय ऊर्जा पर निवेश बढ़ा रहे हैं। इस प्रकार राजस्थान और मध्य पूर्व के बीच सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, ऊर्जा प्रौद्योगिकी तथा निवेश के क्षेत्र में सहयोग की नई संभावनाएँ विकसित हो सकती हैं। भविष्य में राजस्थान भारत की हरित ऊर्जा अर्थव्यवस्था को मध्य पूर्वी निवेश और बाजारों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मध्य पूर्वी बाजारों में राजस्थान के उत्पादों की संभावनाएँ व्यापक हैं, किंतु उनका प्रभावी उपयोग उत्पाद की गुणवत्ता, मूल्य, प्रमाणन, पैकेजिंग, आपूर्ति शृंखला और विपणन क्षमता पर निर्भर करेगा। खनिज एवं सजावटी पत्थर, वस्त्र, हस्तशिल्प, रत्न एवं आभूषण, कृषि एवं खाद्य उत्पाद तथा पर्यटन सेवाएँ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें राजस्थान प्रतिस्पर्धात्मक लाभ विकसित कर सकता है। इसके लिए राज्य में निर्यातोन्मुख औद्योगिक क्लस्टर, आधुनिक परीक्षण एवं प्रमाणन सुविधाएँ, कोल्ड-चेन, डिजिटल व्यापार मंच और अंतरराष्ट्रीय विपणन नेटवर्क विकसित करना आवश्यक है। साथ ही छोटे एवं मध्यम उद्यमों को मध्य पूर्वी बाजारों की मांग, मानकों और व्यापारिक प्रक्रियाओं के अनुरूप तैयार करना होगा। इस प्रकार राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधन, औद्योगिक क्षमता, सांस्कृतिक विरासत और नवीकरणीय ऊर्जा संभावनाएँ मिलकर उसे भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग के उभरते हुए क्षेत्रीय केंद्र के रूप में स्थापित करने की आधारभूमि प्रदान करती हैं।

4. राजस्थान की उभरती रणनीतिक भूमिका, अवसर एवं चुनौतियाँ

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग के बदलते स्वरूप में राजस्थान की भूमिका को केवल एक निर्यातक राज्य के रूप में नहीं, बल्कि उत्पादन, ऊर्जा, निवेश, पर्यटन तथा लॉजिस्टिक संपर्क के संभावित केंद्र के रूप में देखा जाना चाहिए। राज्य की भौगोलिक स्थिति, विशाल भूमि क्षेत्र, खनिज संसाधन, कृषि क्षमता, औद्योगिक आधार और नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाएँ उसे पश्चिम एशियाई बाजारों से जोड़ने के लिए अनुकूल आधार प्रदान करती हैं। विशेष रूप से भारत के पश्चिमी तट के बंदरगाहों, दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे तथा पश्चिमी माल गलियारे से राजस्थान का जुड़ाव उसकी रणनीतिक उपयोगिता को बढ़ाता है। इस दृष्टि से भारत-मध्य पूर्व आर्थिक साझेदारी के विस्तार के साथ राजस्थान राष्ट्रीय आर्थिक संपर्क व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण मध्यवर्ती क्षेत्र के रूप में उभर सकता है (राजस्थान सरकार, 2024)।

राजस्थान की संभावित भूमिका का पहला महत्वपूर्ण आयाम निर्यात विस्तार है। राज्य के खनिज एवं सजावटी पत्थर, वस्त्र, हस्तशिल्प, रत्न एवं आभूषण, कृषि उत्पाद, प्रसंस्कृत खाद्य सामग्री तथा चमड़ा उत्पाद मध्य पूर्वी बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक संभावनाएँ रखते हैं। खाड़ी देशों में निर्माण, पर्यटन, आतिथ्य

और उपभोक्ता बाजारों के विस्तार से इन उत्पादों की मांग बढ़ सकती है। विशेष रूप से जयपुर के रत्न एवं आभूषण, राजस्थान के हस्तशिल्प और वस्त्र तथा संगमरमर एवं अन्य पत्थर आधारित उत्पाद मध्य पूर्व के उच्च आय वाले बाजारों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकते हैं। इसके लिए राज्य के निर्यातकों को बाजार अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों, आकर्षक पैकेजिंग तथा डिजिटल विपणन से जोड़ना आवश्यक होगा। कृषि क्षेत्र में बाजरा, मसाले, दालें, तिलहन तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के निर्यात की संभावनाओं का भी विस्तार किया जा सकता है (कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, 2024)।

विदेशी निवेश राजस्थान की रणनीतिक भूमिका को मजबूत करने वाला दूसरा प्रमुख आयाम है। मध्य पूर्व के संप्रभु निवेश कोष, निजी निवेशक और औद्योगिक समूह भारत में दीर्घकालीन निवेश के अवसर तलाश रहे हैं। राजस्थान में औद्योगिक भूमि, नवीकरणीय ऊर्जा, खनिज-आधारित उद्योग, पर्यटन, आतिथ्य, लॉजिस्टिक, खाद्य प्रसंस्करण और शहरी अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में निवेश की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। राज्य यदि निवेश स्वीकृति की प्रक्रियाओं को सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाता है, तो मध्य पूर्वी निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है। इसके लिए निवेश प्रोत्साहन नीतियों, एकल खिड़की व्यवस्था, औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं और परियोजना क्रियान्वयन की गति को और बेहतर बनाना आवश्यक है। मध्य पूर्वी निवेश को राजस्थान के स्थानीय उद्यमों और औद्योगिक समूहों के साथ जोड़ा जाए तो इससे पूंजी के साथ प्रौद्योगिकी, प्रबंधन कौशल और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच भी प्राप्त हो सकती है।

लॉजिस्टिक एवं आपूर्ति शृंखला केंद्र के रूप में राजस्थान की संभावनाएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। राज्य का केंद्रीय एवं पश्चिमी भारत के बीच संपर्क, राष्ट्रीय राजमार्गों का विस्तार, रेल नेटवर्क और औद्योगिक गलियारों से जुड़ाव इसे माल परिवहन एवं वितरण का महत्वपूर्ण केंद्र बना सकता है। दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा तथा पश्चिमी माल गलियारा राजस्थान के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। गुजरात के मुंद्रा, कांडला और अन्य पश्चिमी तट के बंदरगाहों तक बेहतर संपर्क राजस्थान के निर्यातकों को मध्य पूर्वी बाजारों तक पहुँचने में सुविधा प्रदान कर सकता है। यदि राज्य में आधुनिक माल भंडारण, शीत-शृंखला, कंटेनर सुविधाएँ, माल एकत्रीकरण केंद्र और डिजिटल आपूर्ति शृंखला विकसित की जाएँ, तो राजस्थान एक प्रभावी अंतर्देशीय लॉजिस्टिक केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है (राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम, 2024)।

ऊर्जा और हरित अर्थव्यवस्था राजस्थान की रणनीतिक भूमिका का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उभरता हुआ क्षेत्र है। राजस्थान देश के प्रमुख सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों में शामिल है और इसकी विशाल सौर क्षमता राज्य को भारत की ऊर्जा संक्रमण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। मध्य पूर्व के देश भी अपने आर्थिक विविधीकरण कार्यक्रमों के अंतर्गत सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन और अन्य स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश बढ़ा रहे हैं। ऐसे में राजस्थान और मध्य पूर्व के बीच नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में निवेश, प्रौद्योगिकी और ज्ञान का आदान-प्रदान विकसित किया जा सकता है। विशेष रूप से सौर ऊर्जा उपकरणों के विनिर्माण, हरित हाइड्रोजन, ऊर्जा भंडारण तथा ऊर्जा-कुशल औद्योगिक प्रक्रियाओं में सहयोग के अवसर विकसित हो सकते हैं (नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, 2024)। इससे राजस्थान को केवल ऊर्जा उत्पादक राज्य के रूप में नहीं, बल्कि हरित अर्थव्यवस्था के संभावित निवेश एवं प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस आर्थिक विस्तार का प्रभाव रोजगार और उद्यमिता पर भी पड़ सकता है। निर्यातोन्मुख उद्योगों, पर्यटन, लॉजिस्टिक, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प और नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में नए रोजगार अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को मध्य पूर्वी बाजारों से जोड़ने से स्थानीय उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलेगा। हस्तशिल्प और पारंपरिक उद्योगों में महिलाओं तथा ग्रामीण कारीगरों के लिए बाजार विस्तार की संभावनाएँ भी बढ़ सकती हैं। साथ ही मध्य पूर्वी देशों में बदलती कौशल आवश्यकताओं के अनुरूप राजस्थान के युवाओं को तकनीकी, डिजिटल,

भाषा और व्यावसायिक कौशल प्रदान किए जाएँ तो रोजगार के अंतरराष्ट्रीय अवसरों में भी वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार आर्थिक सहयोग को केवल वस्तुओं और पूंजी के आदान-प्रदान के बजाय मानव संसाधन विकास से जोड़ना आवश्यक है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए राजस्थान को एक समन्वित रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले निर्यातोन्मुख औद्योगिक समूहों को आधुनिक अवसंरचना और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता परीक्षण सुविधाओं से जोड़ा जाना चाहिए। दूसरे, पश्चिमी बंदरगाहों तक तेज और कम लागत वाले परिवहन के लिए रेल-सड़क संपर्क तथा माल ढुलाई सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। तीसरे, मध्य पूर्वी बाजारों की मांग के अनुरूप कौशल विकास कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए। चौथे, राज्य के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को निर्यात प्रक्रियाओं, डिजिटल व्यापार और अंतरराष्ट्रीय विपणन के संबंध में संस्थागत सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए। पाँचवें, मध्य पूर्वी देशों के साथ क्षेत्र-विशिष्ट निवेश एवं व्यापार समझौते तथा व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल और व्यापार मेले आयोजित किए जाने चाहिए। इस प्रकार यदि निर्यात, निवेश, ऊर्जा, लॉजिस्टिक, कौशल और नीति को एकीकृत दृष्टिकोण में विकसित किया जाए, तो राजस्थान भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक सेतु की भूमिका निभा सकता है।

5. निष्कर्ष

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग के बदलते स्वरूप का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि दोनों क्षेत्रों के बीच संबंध अब पारंपरिक व्यापार और ऊर्जा आवश्यकताओं तक सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि निवेश, अवसंरचना, कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा, लॉजिस्टिक, पर्यटन, प्रौद्योगिकी तथा मानव संसाधन जैसे व्यापक क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुके हैं। इस व्यापक आर्थिक परिवर्तन के संदर्भ में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधन, औद्योगिक आधार, कृषि क्षमता, हस्तशिल्प, पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाएँ इसे भारत-मध्य पूर्व आर्थिक साझेदारी में एक संभावित महत्वपूर्ण राज्य के रूप में स्थापित करती हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि राजस्थान की भूमिका प्रत्यक्ष समुद्री संपर्क के अभाव के बावजूद उसकी अंतर्देशीय संपर्क क्षमता और पश्चिमी भारत के बंदरगाहों से जुड़ाव के कारण रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है।

अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि राजस्थान के लिए मध्य पूर्वी बाजारों में निर्यात विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ उपलब्ध हैं। खनिज एवं सजावटी पत्थर, वस्त्र, हस्तशिल्प, रत्न एवं आभूषण, कृषि उत्पाद तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें राज्य प्रतिस्पर्धात्मक लाभ विकसित कर सकता है। विशेष रूप से जयपुर के रत्न एवं आभूषण, राजस्थान के पारंपरिक हस्तशिल्प तथा संगमरमर और अन्य पत्थर आधारित उत्पाद मध्य पूर्वी बाजारों में विशिष्ट पहचान बना सकते हैं। इसी प्रकार बाजारा, मसाले, दालें और अन्य कृषि उत्पाद मध्य पूर्व की खाद्य सुरक्षा आवश्यकताओं से जुड़ सकते हैं। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के अनुसार, पश्चिम एशियाई बाजार भारतीय कृषि उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण निर्यात बाजार हैं (कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, 2024)।

राजस्थान की संभावित रणनीतिक भूमिका का दूसरा महत्वपूर्ण आधार नवीकरणीय ऊर्जा है। राज्य में विशाल सौर ऊर्जा क्षमता उपलब्ध है, जो इसे भारत की हरित ऊर्जा अर्थव्यवस्था का प्रमुख केंद्र बनाती है। दूसरी ओर मध्य पूर्व के देश भी अपनी अर्थव्यवस्थाओं में विविधीकरण तथा ऊर्जा संक्रमण के लिए सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन और अन्य स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश बढ़ा रहे हैं। इस स्थिति में राजस्थान और मध्य पूर्व के बीच ऊर्जा निवेश, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और हरित औद्योगिक परियोजनाओं के लिए नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं (नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, 2024)। भविष्य में यह सहयोग राजस्थान को केवल घरेलू ऊर्जा उत्पादन के केंद्र से आगे बढ़ाकर अंतरराष्ट्रीय हरित अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ क्षेत्र बना सकता है।

निर्यात संवर्धन और विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए राज्य को क्षेत्र-विशिष्ट रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। मध्य पूर्वी बाजारों की मांग के अनुसार उत्पाद विकास, अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता प्रमाणन, पैकेजिंग, ब्रांड निर्माण और डिजिटल विपणन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सूक्ष्म, लघु एवं

मध्यम उद्यमों को निर्यात प्रक्रियाओं और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने के लिए विशेष संस्थागत सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए। साथ ही मध्य पूर्वी निवेशकों के लिए खनिज प्रसंस्करण, पर्यटन, खाद्य प्रसंस्करण, नवीकरणीय ऊर्जा, लॉजिस्टिक और औद्योगिक अवसंरचना में स्पष्ट निवेश परियोजनाएँ विकसित की जा सकती हैं। निवेश स्वीकृति की प्रक्रियाओं को सरल और समयबद्ध बनाना तथा नीतिगत स्थिरता बनाए रखना इस दिशा में महत्वपूर्ण होगा।

परिवहन एवं लॉजिस्टिक अवसंरचना का विकास राजस्थान की रणनीतिक क्षमता को वास्तविक आर्थिक लाभ में बदलने की प्रमुख आवश्यकता है। दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे तथा पश्चिमी माल गलियारे से राज्य का जुड़ाव एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। गुजरात के पश्चिमी तट के बंदरगाहों तक तेज एवं कम लागत वाले रेल और सड़क संपर्क को और मजबूत किया जाना चाहिए। इसके साथ आधुनिक माल भंडारण, शीत-शृंखला, कंटेनर सुविधाएँ, वितरण केंद्र तथा डिजिटल आपूर्ति शृंखला विकसित करने की आवश्यकता है। ऐसी सुविधाएँ राज्य के निर्यातकों को मध्य पूर्वी बाजारों तक समयबद्ध और प्रतिस्पर्धात्मक लागत पर पहुँच बनाने में सहायता करेंगी (राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम, 2024)। कौशल विकास भी भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग में राजस्थान की भूमिका को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण घटक है। निर्यातोन्मुख उद्योगों, पर्यटन, लॉजिस्टिक, नवीकरणीय ऊर्जा, खाद्य प्रसंस्करण तथा तकनीकी क्षेत्रों में उद्योग की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। प्रशिक्षण संस्थानों और उद्योगों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करके युवाओं को तकनीकी, डिजिटल, भाषाई और व्यावसायिक दक्षताओं से युक्त किया जा सकता है। इससे एक ओर राजस्थान के युवाओं के लिए मध्य पूर्व में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, वहीं दूसरी ओर राज्य में विदेशी निवेश से उत्पन्न रोजगार की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सकेगा।

संदर्भ सूची

- अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी। (2024)। *विश्व ऊर्जा परिदृश्य 2024*। पेरिस: अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी।
- कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण। (2024)। *भारत से कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों का निर्यात*। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- भारत सरकार। (2023)। *भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा: साझेदारी और संपर्क की पहल*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
- भारत सरकार। (2024)। *भारत और खाड़ी सहयोग परिषद के देशों के साथ आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध*। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- भारतीय खान ब्यूरो। (2023)। *भारतीय खनिज वर्ष-पुस्तिका 2022-23*। खान मंत्रालय, भारत सरकार, नागपुर।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय। (2024)। *भारत का विदेश व्यापार एवं वाणिज्यिक संबंध*। भारत सरकार, नई दिल्ली।
- वाणिज्य विभाग। (2024)। *भारत-संयुक्त अरब अमीरात व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता*। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय। (2024)। *भारत में नवीकरणीय ऊर्जा की स्थिति एवं संभावनाएँ*। भारत सरकार, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम। (2024)। *दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा: औद्योगिक एवं परिवहन संपर्क की संभावनाएँ*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
- राजस्थान सरकार। (2024)। *राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना एवं औद्योगिक विकास संबंधी विवरण*। उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
- राजस्थान सरकार। (2024)। *राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2023-24*। वित्त विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।

राजस्थान सरकार। (2024)। *राजस्थान निर्यात संवर्धन नीति एवं निर्यात संबंधी सांख्यिकीय विवरण* उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।

राजस्थान सरकार। (2024)। *राजस्थान की सौर एवं नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता* ऊर्जा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।

विश्व बैंक। (2024)। *प्रवासन एवं विकास संक्षिप्त विवरण: अंतरराष्ट्रीय प्रेषण प्रवृत्तियाँ* वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।

भारतीय रिजर्व बैंक। (2024)। *भारत का भुगतान संतुलन, बाह्य क्षेत्र एवं प्रेषण संबंधी सांख्यिकी* मुंबई: भारतीय रिजर्व बैंक।

नीति आयोग। (2023)। *भारत की ऊर्जा संक्रमण एवं हरित विकास संबंधी रणनीति* नई दिल्ली: भारत सरकार।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ। (2024)। *भारत-मध्य पूर्व आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों की संभावनाएँ* नई दिल्ली: भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ।

भारतीय उद्योग परिसंघ। (2024)। *भारत-खाड़ी आर्थिक साझेदारी: व्यापार, निवेश एवं औद्योगिक अवसर* नई दिल्ली: भारतीय उद्योग परिसंघ।

खाड़ी सहयोग परिषद। (2024)। *खाड़ी क्षेत्र की आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति* रियाद: खाड़ी सहयोग परिषद।

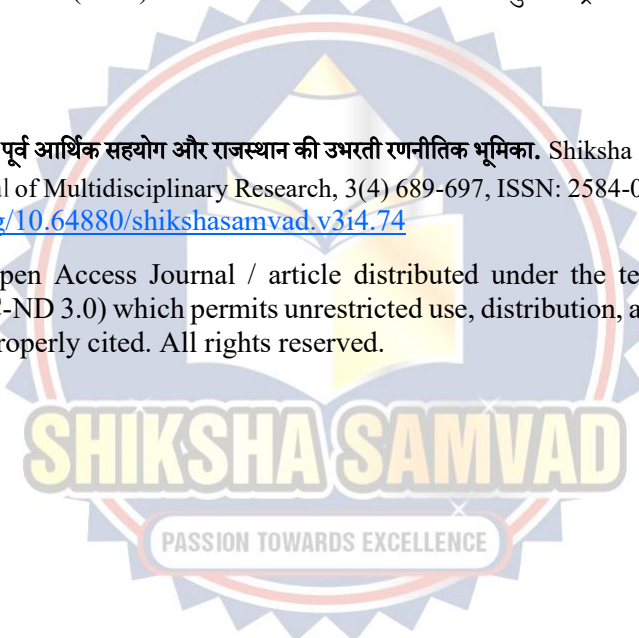
संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन। (2024)। *विश्व निवेश रिपोर्ट 2024* जिनेवा: संयुक्त राष्ट्र।

Cite the Article:

इन्दौलिया, राज सिंह . (2026). *भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग और राजस्थान की उभरती रणनीतिक भूमिका*. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 3(4) 689-697, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, June-2026. DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.74>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

राज सिंह इन्दौलिया

For publication of research paper title

भारत-मध्य पूर्व आर्थिक सहयोग और राजस्थान की उभरती रणनीतिक
भूमिका

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-04, Month June 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.69

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>

DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.74>